आज़ाद फाउण्डेशन

आज़ाद परिंदे

न्यूजलेटर (सीमित वितरण हेतु) आज़ाद फाउण्डेशन, वर्ष 2020 अंक 16

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना

मेरे लिए धर्म का अर्थ क्या है? सोचने बैठी तो आज मुझे बहुत कुछ याद आ रहा है। कक्षा चार तक मैं नियमित रूप से पूजा अर्चना करती थी। कक्षा पांच में आकर रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित 'चतुरंग' पढ़ने का अवसर मिला। 'चतुरंग' में ताऊजी के रचित्र ने मुझे भगवान को अस्वीकार करना सिखाया। उस दौरान मैं इतनी नास्तिक बन गई कि कक्षा आठ के दिनों में हमारे स्कूल के दरबान द्वारा प्रतिष्ठित एक शिवलिंग पर अपना पैर रखकर दोस्तों को बताया कि मैं कितनी बड़ी नास्तिक हूं। फलस्वरूप मुझे स्कूल की प्रिंसिपल के कमरे में बुलाया गया। प्रिंसिपल ने समझाया, मेरा अपना धर्म पर विश्वास चाहे कुछ भी हो, मुझे दरबान की आस्था को ठेस पहुंचाने का अधिकार नहीं है। हमारा देश धर्मनिरपेक्ष है। धर्मनिरपेक्ष का अर्थ है - इस देश में जो रहते हैं, घूमने अथवा काम करने आते हैं, वे सभी अपनी इच्छानुसार किसी भी धर्म पर विश्वास करते हैं, उन धर्मों के नियमों का पालन कर सकते हैं तथा यदि कोई किसी भी धर्म का पालन ना करना चाहे तो उसे उसकी भी छूट है। कोई यह नहीं कह सकता कि आपका धर्म बुरा है या मेरा धर्म अच्छा है।

बड़ी होते-होते धर्म के विषय में मैंने और गहराई से सोचा। तब समझ में आया कि धर्म एक आध्यात्मिक विश्वास की बात है। 'जो धार्मिक हैं, वो कुसंस्कारों में उलझे हुए हैं' - ये बात भी निराधार है। इस देश में बहुत से धार्मिक आंदोलनों ने कुसंस्कारी तथा अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाई है। धर्म - इंसान की आपसी रिश्ते की बुनियाद भी है और ये रिश्ता केवल अपने धर्म के अंदर सीमित नहीं रहता, विभिन्न धर्मों के लोगों में संचारित होता है। धार्मिक उत्सवों में और तीज-त्योहारों में लोग धर्म को केंद्र बनाकर एकजुट होते हैं, बातचीत करते हैं, सजते-संवरते हैं और खाना-पीना करते हैं। दुर्गा पूजा, ईद, दीपावली, गुरू नानक देव का जन्मदिन तथा बड़े दिन के उत्सव पर हमें ये सब देखने को मिलता है। धर्म के कुछ हानिकाकर पक्ष भी होते हैं। धार्मिक नियमों का नाम लेकर कई बार लड़कियों पर नियम और निषेध लगाए जाते हैं। लड़कियों का धर्म स्थान में प्रवेश निषिद्ध होता है, माहवारी जैसे प्राकृतिक प्रक्रिया की दुहाई देकर लड़कियों को पूजन कार्य में सम्मिलित ना होने देना इत्यादि। दरअसल धर्म के नाम पर लड़कियों को अधीनता में रखने के ये सारे कानून धर्म प्रतिष्ठानों ने बनाए हैं और अधिकतर संगठित धर्म प्रतिष्ठान को चलाने वाले लोग पितृतांत्रिक सोच वाले हाते हैं।

परंतु लड़कियां/औरतें आजकल पीछे नहीं हैं। संपूर्ण विश्व में विभिन्न संप्रदाय की स्त्रियां आज अपने अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ रही हैं। केरल में शबरीमाला मंदिर में माहवारी के समय औरतों को प्रवेश की लड़ाई को लेकर आई खबरें हम सबको मालूम है। इसी तरह से हमारे देश के मुसलमान महिलाओं के हाजी अली के दरगाह में प्रवेश करने का अधिकार भी छीन लिया है। इस आंदोलन की खबर भी हम जानते हैं।

अब मैं शुरुआती मुद्दे पर वापस आती हूं। मेरे लिए धर्म का अर्थ उम्र तथा अनुभव के साथ-साथ बदलता रहा है। इस क्षण में मेरे लिए धर्म एक ऐसा साधुभाव है जो इंसान को इंसान से प्यार करना सिखाता है, सम्मान करना सिखाता है, लिंग, जात-पात, धार्मिक परिचय, यौन परिचिति या यौन पसंदगी, प्रतिबंधित्व, इन सभी तरह की विशेषताओं को समानता की दृष्टि से देखना सिखाता है। धर्म कहता है जो नास्तिक है, वो भी सम्मान के योग्य है।

मुश्किल होती है तो सिर्फ धर्म के दलालों को लेकर, वो लोग हैं जो धर्म के नाम पर मारपीट करते हैं। इसलिए हमें धर्म के दलालों का विरोध करना है और धर्म में मानव प्रेम की भावना को चारों ओर फैलाना है।

● दोलोन गांगुली

नमस्कार, मेरा नाम ग्रेस एलीजाबेथ है। मैं कैथलिक ईसाई हूं। इस धर्म में मैं तब से हूं जब से मैंने होंश संभाला है। अगर मैं अपने धर्म के बारे में कहूं तो यही कहना चाहूंगी कि हमारा धर्म हमें सभी धर्मों का आदर करना सिखाता है और हमारा भारत कई धर्मों, संस्कृति का समावेश है। जिसमें तरह-तरह के त्योहार ओर संस्कृति पाई जाती है। मैं बचपन से ही सारे त्योहार मानती हूं, जो मेरे मन को सुकून और शांति देता है।

● ग्रेस एलीजाबेथ, सखा कैब चालक

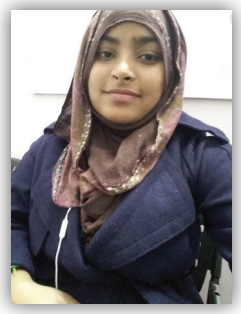

समाज में रहने के लिए धर्म के साथ चलना बहुत महत्वपूर्ण है। धर्म ही इन्सान की पहचान बनाता है, सामाजिक दृष्टि से। मेरे लिए धर्म बहुत अच्छा विकल्प है। चीजो को समझने के लिए कि समाज में हम किस तरह अपने आप को प्रस्तुत कर सकते हैं। किसी भी धर्म में कोई बुराई नहीं है और उसको मानने से मनुष्य के अंदर हर एक व्यक्ति के लिए सद्भावना पैदा होती है जिससे एक अच्छे समाज का निर्माण होता है।

मैं अपने धर्म से बहुत संतुष्ट हूं। यह मुझमें आत्मविश्वास बढ़ाता है और हर एक समाज धर्म के अनुसार ही अपना जीवन गुजारता है जो कि इंसान के लिए सही है।

धर्म खुद में बहुत बड़ा विषय है जिसे मानना थोड़ा कठिन हो जाता है। लेकिन जहां तक मुमकिन होता है इन्सान वहां तक मानता है। धर्म इन्सान के अंदर करूणा का भाव पैदा करता है। धर्म के अनुसार जो त्योहार आते हैं उनमें अपनी खुशियां ढूंढने का अवसर मिल जाता है, जो कि परिवार एवं समुदाय में एकता का भाव पैदा करती है। यह चीज मुझे बहुत पसंद है। मेरा धर्म किसी भी धर्म की बात पर पाबंदी नहीं लगाता।

● फिरदौस, पूर्वी दिल्ली, मोबिलाइज़र

धर्म क्या है?

शांति और शक्ति

मुझे जब कोई परेशानी होती है, तब मुझे ध्यान में बैठना अच्छा लगता है। उससे मुझे शांति मिलती है। मुझे सारे लोग और सारे धर्मों को सम्मान करने की सीख मिलती है। अगर कोई मेरी गलत निंदा करता है या कुछ गलत कह देता है तो मैं लड़ने के बजाए उनको सम्मान से ही देखती हूं। मंदिर जाना मुझे अच्छा लगता है। ध्यान में बैठकर मुझे कठिन चुनौतियों का सामना करने की शक्ति मिलती है, जिससे मैं आसानी से गलत व्यवहार का सामना कर सकती हूं।

● गीरजा, दक्षिणी दिल्ली

धर्म और जीवन

हम चाहे किसी भी धर्म से जुड़े हों, हमारे जीवन के तौर-तरीके उस धर्म के नियम अनुसार चलते हैं। मैं हिन्दू धर्म की बात करूं तो हमें सिखाया जाता है कि रोज सुबह जल्दी उठकर पहले पूजा करनी चाहिए। ज्यादातार लोग शाकाहारी खाना पसंद करते हैं, कभी ऐसे दिन भी होते हैं जब व्रत रखा जाता है। त्योहारों वाले दिन पूजा-पाठ ज्यादा होता है, नए कपड़े पहने जाते हैं और नए पकवान, मिठाई आदि बनाए जाते हैं। त्योहारों वाले समय पे लोग घर में खूब अच्छी तरह से सफाई करते हैं, एक-दूसरे के घर जाकर खुशियां बांटते हैं।

समय के साथ-साथ लोगों के विचारों में परिवर्तन आ रहा है, वे दूसरे धर्म के लोगों से सहयोग और सम्मान के पेश आते हैं। कोई ऐसे लोग हैं जो त्योहारों में दूसरे धर्म के लोगों से भी खुलकर मिलते-जुलते है, मिठाई बांटते हैं। हर रोज लोगों की सोच थोड़ी-थोड़ी खुल रही है, हालाकि शादी को लेकर लोग अभी भी रूढ़िवादी विचार धारा रखते हैं, वे दूसरे धर्म से रिश्ता जोड़ना पसंद नहीं करते।

● रेनू, दक्षिणी दिल्ली

दूसरो की भलाई के बारे में सोचना

धर्म मुझे अपने आप को शांत करने में और दूसरों के साथ खड़े होने में मदद करता है। धर्म ने मुझे सिखाया कि तुम सिर्फ खुद की और खुद के परिवार के लिए चिंता न करो, तुम दूसरों के लिए भी चिन्ता करो। मैं ने जब दूसरों के लिए प्रार्थना करना शुरु किया तब देखा कि मेरा मन बहुत शान्त हुआ और मुझे अच्छा लगने लगा।

पहले मैं ऐसा नहीं करती थी लेकिन अब मैंने जाना कि दूसरों के लिए प्रार्थना करने से खुद का भी अच्छा होता है। पहले मैं सिर्फ अपने और अपने परिवार के बारे में सोचती थी। अब औरों के बारे में सोच कर, प्रार्थना करके मुझे शांति मिलती है।

● लक्ष्मी अधिकारी, कोलकाता

सभी मनुष्य ही तो हैं

मेरी शादी से पहले मैं दिल्ली में रहती थी, तब धर्म के आधार पर होने वाले भेद-भाव को कभी महसूस नहीं किया था। शादी के बाद जब मैं एक छोटे शहर में अपनी ससुराल में रहने लगी तो मैंने देखा कि लोगों के दिलों में धर्म, जात को लेकर बहुत भेद-भाव है। एक बार मैं पानी भरने गई तो मेरे साथ बहुत गलत व्यवहार हुआ। मुझे मेरे पड़ोसी ने कहा कि अपने बर्तन एकदम दूर रखो, कहीं उनके बर्तनों को छू ना ले। मुझे समझ नहीं आया, पानी के बर्तन से क्या छुआ-छूत हो सकती है? वहां लोग इतनी ऊँच-नीच मानते है कि अगर किसी नीची जाति वाले ने पानी या चाय पी ली तो ऊँची जाति वाले लोग वो बर्तन तक फेंक देते है। मुझे लगता है ये सारी रीति-रिवाज़ किसी पुस्तक में नहीं, बल्कि लोग सुनी-सुनाई बातों को सच मान लेते हैं। धर्म समाज की सोच देखता है।

● सरिता, पूर्वी दिल्ली

नियम के अनुसार चलना

मैं मुस्लिम धर्म से जुड़ी हूं। धर्म के नियमों का पालन करते हुए मैं रोज सुबह 4 बजे उठती हूं। मस्जिद में अजान होने के साथ ही मैं नमाज़ पढ़ती हूं। मेरे घर में दिन में 5 बार नमाज़ पढ़ते हैं। नमाज़ पढ़ने के ये नियम का हम हर रोज पालन करते हैं।

धर्म के अनुसार त्योहारों में हम नए कपड़े खरीदते हैं और कई तरह के पकवान बनाते हैं। महिलाओं को ज्यादा पर्दे में रहना और गैर लोगों से बात करना या खुलकर हंसने पर पाबंदी है। कहीं आने-जाने पर भी पाबंदी होती है। ज्यादातर महिलाओं का जीवन ऐसे ही बीत जाता है। अब ऐसा लगता है कि धीरे-धीरे लोगों की सोच बदल रही है और मुस्लिम महिलाओं की पाबंदियां कम हो रही हैं। अब महिलाएं अकेले घर से बाहर जाती हैं, कुछ महिलाएं काम भी करती हैं। बदलती सोच के साथ हमारे रोज़मर्रा का जीवन भी बदल रहा है।

● सबीना, दक्षिणी दिल्ली

सबसे बड़ा धर्म इंसानियत

हमारे देश में लोग धर्म-जाति, ऊँच-नीच, छूत-अछूत में बंद चुके है। हर एक को अपना धर्म सबसे अच्छा और सबसे ऊँचा लगता है और धर्म के आधार नियमों के हिसाब से लोग जीना पसंद करते हैं। किसी भी जाति या धर्म के लोग सर उठाकर किसी अन्य के धर्म या जाति के रीति-रिवाज को मानना तो दूर, समझना भी उचित नहीं समझते। धर्म को लोग अपनी पहचान समझते हैं और उसके अंतर्गत नियम जैसे कि खाना-पीना, रहना, प्रार्थना करना को बिना प्रश्न पूछे मानना पसंद करते हैं।

कुछ लोग इतने ज्यादा धर्म चेष्टा होते हैं कि वे दूसरे धर्म के लोगों के साथ मिलना या बात करना भी पसंद नहीं करते। मुझे लगता है, सबसे बड़ा धर्म इंसानियत होना चाहिए और इंसान को एक दूसरे की मदद करनी चाहिए। मिल-जुलकर रहना चाहिए।

● यस्हिका, पूर्वी दिल्ली

हिंदू कहे राम मोहि प्यारा, मुसलमान कहे रहीम आपस में दोउ लड़ि लड़ि मुए, ना जाने कोउ मरम।

फिजूलखर्ची

हमारे देश में धर्म के नाम पर लोग मनचाहे खर्चे कर देते हैं। ईश्वर के नाम पर लोग पैसे खर्च करने में कभी भी नहीं कतराते। क्या हमने किसी भी किताब में पढ़ा है कि ईश्वर को फूल-हार चाहिए, खाने के लिए फल चाहिए या चादर चाहिए? ईश्वर को ये सारी भौतिकवादी चीज़ों की ना जरूरत है और ना ही कोई मतलब। इसकी बजाए जो गरीब है, बेसहारा लोग हैं, बच्चे हैं उनपर पैसे खर्च करके उनको खाना, कपड़ा या ओढ़ने के लिए चादर दिया जाए तो ज्यादा सही होगा। अगर सभी लोग इस सोच से बरताव करें तो हमारे देश में कोई भूखा नहीं मरेगा। किसी धर्म स्थल पर पैसे ना लगा कर अगर किसी स्कूल, अस्पताल आदि में पैसे दें तो हमारा देश तरक्की कर सकता है।

● अल्का सिंह, पूर्वी दिल्ली

संत कबीर कहते हैं... धर्म क्या कहता है और धर्म के नाम पर क्या होता है, दोनों में अंतर होता है।

या अंधविश्वास

मेरा यही मानना है धर्म के नाम पर कुछ जानवरों को विशेष धार्मिक महत्त्व दिया जाता है, इनको पूजा जाता है। लेकिन कुछ जानवरों की बली चढ़ाई जाती है। किसी भी जीव की हत्या करना क्या धर्म है?

● पामपा ज्ञान, एफ.एल.पी., कोलकाता

धर्म या जबर्दस्ती

हर रोज की जीवनधारा मे धर्म का प्रभाव मेरे ऊपर क्या है। मुझे शाँखा और सिन्दुर पहनना पड़ता है, घर मे पूजा के दौरान उपवास करना पड़ता है। पति और बच्चों के लिए भी उपवास करना पड़ता है। मेरे ससुरजी या फिर सासुमाँ अगर मर जाती है तो मुझे तेरह दिनों तक मानना पड़ता है। अगर नहीं माना गया, तो परिवार में अशान्ति होती है। लेकिन मेरे पिताजी और माँ की अगर मौत हो जाये, तब तीन दिनों तक मानने से ही हो जाता है। क्योंकि अब मेरी शादी हो चुकी है।

मेरा मानना यह है कि धर्म के बारे मे ना सोचकर अगर ससुरजी, सासुमाँ और माता-पिता को उनके जीवनकाल मे देखभाल की जाए या फिर उनका खाना-पीना, घूमना ये सब का ठीक से आयोजन हम कर पायें और उनको हम प्यार करें, तो मुझे लगता है कि ये नियमों का पालन नहीं करना चाहिए। शादी के बाद लड़कियों को शाँखा, सिन्दूर पहनना पड़ता है, क्योंकि वे हिन्दू है। लेकिन पति भी तो हिन्दू है, वो क्यों कुछ नहीं पहनता? कारण, वो लड़का है, और मैं लड़की हूँ, इसलिए मुझे ये सब पहनना पड़ेगा! यदि यह जरूरी है तो दोनों को ही मानना चाहिए; नहीं तो किसी को नहीं। अशान्ति के डर से और एक-दूसरे के साथ में रहने के कारण हमें ये सब न चाहते हुये भी मानना पड़ता है।

● अर्चना मंडल, कोलकाता

बीमारी है, माता नहीं

हमारे समाज में सालों से कहीं-सुनी बातों को प्रथा मान लेना बहुत सामान्य है। लोग बातों में कोई सच्चाई ढूंढने की मेहनत नहीं करना चाहते। एक ऐसी प्रथा है 'माता निकल जाना' जिसे डॉक्टर्स चिकन पॉक्स या मीज़ल्स कहते हैं। विज्ञान में इस बिमारी की काफी समझ है और उसे खत्म करने के लिए काफी अच्छी दवाई भी है। एक सामान्य सी बिमारी को धर्म का नाम देकर लोग गलत चक्करों में पड़ जाते हैं और सही इलाज कराने से दूर रह जाते है।

● नेहा, उत्तरी दिल्ली

अरमानो को खत्म करना

मुझे ये नहीं समझ आता कि समाज और धर्म विद्वावा महिलाओं पर इतने नियम क्यों लगाता है? जब महिला विधवा हो जाए तो लोग कहते हैं कि उसे सफेद या हल्के रंग के कपड़े में ही होना चाहिए। जब एक महिला विधवा होती है, तो सबको उसके पहनावे, रहन-सहन से पता चल जाना चाहिए। पर जब एक पुरुष विधुर होता है तो उस पर कोई नियम लागू नहीं होता। महिला के पति का जीवन समाप्त होने पर महिला के अरमानों को इस तरह क्यों समाप्त कर देते हैं?

● राजकुमारी, उत्तरी दिल्ली

बदलाव जरूरी है

हर धर्म हमें अपने जीवन को एक अच्छे और सही तरीके से जीने की शिक्षा देता है। लेकिन तब क्या हो जब इसी धर्म की आड़ में किसी के विचारों को दबाया जाने लगे या फिर उन्हें कुछ करने से रोका जाने लगे! आज के इस आधुनिक युग में भी ऐसे ही दकियानूसी लोग हैं जो धर्म के नाम पर महिलाओं को उनकी इच्छा के अनुसार जीने नहीं देते या फिर उनके जीवन को जीते जी नरक बना देते हैं। इसका सबसे उदाहरण हमारे मासिक धर्म के दौरान देखा जा सकता है। जब महिलाओं को अशुद्ध माना जाने लगता है। ये वो समय होता है जब उन्हें खुद उनके घरवाले संदेह भरी निगाहों से देखने लगते हैं। हाँ, पहले के मुकाबले अब चीजें बदलने लगी हैं लेकिन अब भी समाज के कुछ हिस्सों में ये पुरानी सोच कायम है। जहां एक ओर हम मंगल ग्रह तक पहुँच चुके हैं वहीं दूसरी ओर हम अब भी उसी पिछड़ी सोच का हिस्सा हैं जहाँ पर एक महिला सिर्फ रसोई तक ही सीमित रहती है। अब समय आ गया है कि हम इस सोच को बदलें और महिलाओं को भी मौका दें हर वो चीज करने का जो वो करना चाहती हैं। क्यूंकि अगर महिला पुरुष के साथ कन्धा मिलकर चलेगी तो समाज की तरक्की ही होगी और इसमें हम सबकी भलाई ही है।

● खुशी, ट्रेनिंग टीम, दक्षिणी दिल्ली

धर्म के नाम पर जुल्म

नकारात्मक वृत्ति वाले ऐसे बहुत से लोग होते हैं जो धर्म के नाम पर दंगे-फसाद, लड़ाई-झगड़े फैलाते हैं। आम लोगों को इन परिस्थितियों से बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। सामान्य लोगों को शांति से जीवन बिताना पसंद है। यदि किसी और धर्म में विश्वास या रूचि नहीं भी ले, फिर भी अपने धर्म में खुश रहना पसंद है। गांव में ऐसे कई किस्से होते हैं, जिसमें छोटी कही जाने वाली जाति के लोगों को बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

जातिगत आधार पर ऊँची जाति वाले लोग उन पर दबाव डालते हैं। धर्म के नाम पर उनके खाने-पीने पर रोक-टोक लगाते हैं। अगर छोटी जाति से छोटी भूल भी हो जाए तो ऊँची जाति के लोग गांव से निकाल भी देते हैं। कोई भी धर्म इंसान पर जुल्म करना नहीं सिखाता, ये सोच सिर्फ लोगों में भरी हुई है।

● आराधना, उत्तरी दिल्ली

धर्म और राजनीति

कभी-कभी कुछ राजनैतिक धर्म को लेकर हमारे आस-पास भेदभाव का माहौल बनाने की कोशिश करते हैं। पर शिक्षा की वजह से, समाज में जागरूकता बढ़ गई है। शायद इसीलिए देश के नागरिक एकजुट होकर धर्म और नागरिकता की राजनीति के खिलाफ आवाज़ उठा रहे हैं।

● नालंदा, उत्तरी दिल्ली

धर्म कैसे हमें तोड़ता है

क्या धार्मिक रीति का पालन सिर्फ महिला करेंगी?

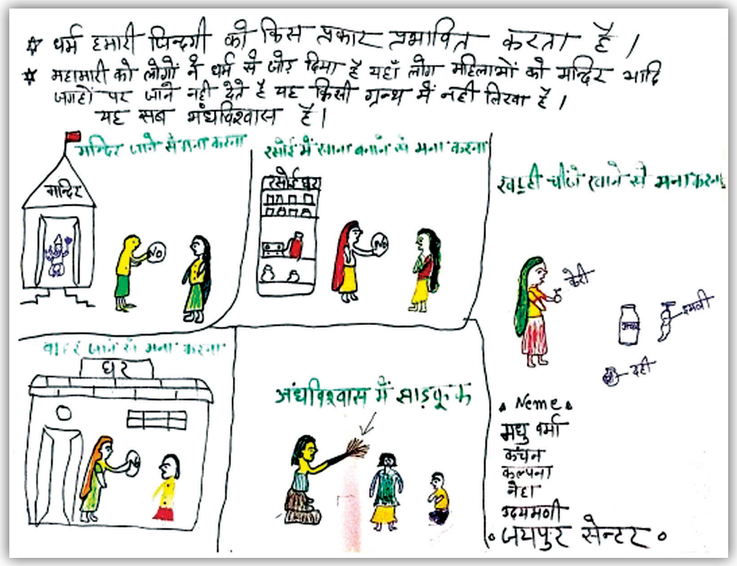

नियमों को धर्म का नाम देना

मुझे लगता है कि समाज ने महिलाओं को पुरुषो के दबाव में रहने के लिए कई नियम बनाए हैं और नियम को धर्म का नाम दे दिया है। वे महिलाओं को कहते हैं कि इन नियमों का पालन करना ही तुम्हारा धर्म है। धर्म के इन नियमों के जरिए महिलाओं की जीवनशैली बिता देते हैं। जैसे तुम अपना सिर ढककर रखो, पर्दे में रहो, घर पर रहकर परिवार की सेवा करो, कहीं बाहर मत जाओ। घर में पहले खाना घर के पुरुष खाएंगे और महिलाएं बाद में खाएंगी। ये सारे नियम महिलाओं को आगे बढ़ने से रोकने के लिए है। किसी भी धार्मिक पुस्तक में ये बातें नहीं लिखी है।

● किरण सिंह, उत्तरी कोलकाता

क्या गलत नियमों का पालन करना धर्म है

महिलाओं को ज़्यादातर धार्मिक बाधाओ एवं निषेध का पालन करना पड़ता है। समाज आज भी महिलाओं को दबाकर रखते हैं। हम महिलाएँ पुरखों के समय से यह देखती, सहती आ रहीं है। महिलाओं का धर्म सिर्फ दूसरों की सेवा करना माना जाता हैं। वह भी इस धर्म का पालन समाजिक तत्वो के कारण करती हैं। लोग क्या कहेंगे या क्या सोचेंगे? उनका धर्म सिर्फ अच्छी महिला बनना है। कई महिलाएँ सबको खुश रखने के दबाव में इन नियमों का पालन करती हैं।

पुरुषों के लिए ऐसे कोई नियम नहीं बनाएं जाते। उनके धर्म की परिभाषा नहीं है। मेरे हिसाब से धर्म सभी के लिए बराबर है, सबका सम्मान और कर्तव्य का पालन करना।

● रश्मि बेगम, एफएलपी, कोलकाता

रीति-रिवाज़ और महिला

मुझे लगता है कि समाज ने ज्यादातर प्रथाएं, मान्यताएं महिलाओं के लिए बनाई है, जैसे महिलाएं एक बंधन में ही रह जाएं। जैसे त्योहारों पर उपवास रखना सिर्फ महिलाओं को कहा जाता है। कुछ ऐसे भी व्रत हैं जो कि अपने पति की उम्र बढ़ाने के लिए महिलाओं को रखने के लिए कहते हैं। महावारी में महिलाओं को एक अछूत की तरह देखते है। जब किसी महिला का पति मर जाता है, तो उस महिला का जैसे वजूद ही चला गया हो, उसे किसी भी कार्यक्रम में शामिल नहीं किया जाता। ये सारी प्रथाएं सिर्फ महिलाओं पर ही थोपी जाती है, जिसका कोई मतलब नहीं है। इन प्रथाओं को आजकल के पढ़े-लिखे समाज में बंद कर देनी चाहिए।

● सोनम, दक्षिणी दिल्ली

महिलाओं के लिए नियम

महिलाओं को माहवारी के नाम पर काफी अंध विश्वासों से बांधा जाता है। उन दिनों में महिलाओं को अछूत समझे है, अलग कमरे में रहने को कहते है, रसोई घर में ना जाना, धार्मिक चीज़ों से दूर रहना। अगर कहीं बाहर जाना हो तो कहते हैं कि चौराहे से होते हुए ना जाना, बाल खुले रखकर नहीं जाना। ये सारी बातों का कोई तर्क तो है नहीं। लोग सालों से चल रही प्रथाओं को बिना सोचे समझे नियम बनाकर उस पर चलना जरूरी समझते हैं।

● चंद्रेश बाई, जयपुर

महिला और पुरुष में ऊंच-नीच क्यों

समाज हमेशा से पुरुषों को ऊँचा और महिलाओं को नीचा मानता है। ये ऊँच-नीच किसी भी धार्मिक पुस्तक में नहीं लिखी गई, फिर क्यों लोग पुरुषों को ऊँचा दर्जा और महिलाओं को नीचा मानते हैं? समाज को खुश करने के लिए पुरुष महिलाओं को बंधन में रखते हैं। उनको ये लगता है कि महिलाओं को रोक-टोक करना, अपने लिए काम करवाना और उनकी आजादी पर रोक डालना उसका जन्मसिद्ध अधिकार है। जो कि गलत है।

● निकिता, पूर्वी दिल्ली

> कुकुड़ी मारे, बकरी मारे, हक हक करि बोलै। सबै जीव सांई के प्यारे उब रहूंगे क्या बोलें।

महिलाओं के लिए बनाए गए अंधविश्वास

समाज में महिलाओं के लिए कई ऐसे अंधविश्वास हैं जो उनको आगे बढ़ने से रोकते हैं। लोग मानते हैं कि महिलाओं को रात में घर से बाहर चौराहे पर नहीं जाना चाहिए। ये रोक-टोक महिलाओं की सुरक्षा की समझ से नहीं बल्कि अंधविश्वास के कारण है। ऐसे ही, एक बड़ा अंधविश्वास माहवारी को लेकर है। माहवारी के समय खट्टा खाने को रोकना, पूजा-पाठ ना करने देना, अपनी ही रसोई घर में जाने से रोकना, ये सारे नियम धर्म के नाम पर डाले जाते हैं। वास्तव में, माहवारी के समय महिलाओं को तकलीफ ना हो, इसलिए कम काम करना और आराम करने को कहते हैं। इसका धर्म से कोई लेना-देना नहीं हैं।

● सविता महावर, जयपुर

क्यों है अलग रिवाज़ महिला और पुरुष के लिए

व्रत और पर्व महिला और पुरुषों में बहुत प्रकार से भेदभाव करते हैं। जैसे - महिला अगर कोई भी व्रत करेगी तो उसे उसके पति से जोड़ा जाता है। महिलाओं को पति की लंबी उम्र के लिए करवाचौथ का व्रत करना अनिवार्य है। जबकि पति को यह सब करना जरूरी नहीं है। पुरुषों को किसी भी व्रत या पूजा करने के लिए विवश नहीं किया जाता है। और अगर किसी त्योहार से जोड़ा जाए तो जैसे कि मकर संक्राति को महिलाएं रसोईघर में अपने काम में, बहुत से पकवान बनाने में और पूजा व दान पुण्य में लगी रहती है और पुरुष उस दिन किसी भी पूजा या व्रत या कोई काम नहीं करते हैं तो बस घरों की छतों पर पतंग उड़ाना, मस्ती करना, लाउडस्पीकर चलाना ये सब मौज करते हैं। भाईदोज को जबतक बहन अपने भाई को टीका नहीं लगा देती तब तक वो कुछ खा नहीं सकती है। जबकि भाई सुबह का नाश्ता वगैराह कर चुका होता है। तो इसी अंतर से यह सब समझ आता है कि पुरुषों और महिलाओं में भेदभाव किया जाता है।

● आज़ाद ट्रेनी, जयपुर

> संत कबीर कहते हैं... हिन्दू बकरी की और मुसलमान मुर्गे की बली देते हैं। लेकिन भगवान के आगे तो सभी जीव एक ही हैं, भगवान सभी को प्यार करते है।

माहवारी है खासियत

मेरी एक दोस्त को जब भी मासिक धर्म होता है उसे उसी के घर में सबसे अलग रखा जाता है। तथा उसे खाना नहीं बनाने दिया जाता। यहां तक कि उसे रसोई घर में जाने की भी मनाही है और उसे खाने पीने की चीजों के लिए भी रोका जाता है। तथा पूजा स्थल जैसे मंदिर आदि व किसी भी धार्मिक प्रक्रिया में भाग लेने नहीं दिया जाता। उसी के साथ उसे एक अलग कमरे में रखा जाता है। उसे घर में इधर-उधर घूमने नहीं दिया जाता और उन दिनों में बैड पर भी नहीं बैठने दिया जाता। इस सबको देखकर मुझे बहुत बुरा लगता है क्योंकि समय के साथ परिवर्तन जरूरी है। लोगों को माहवारी के पीछे का विज्ञान समझने की जरूरत है। उनको पता चलना चाहिए कि माहवारी होने से कोई अपवित्र नहीं होता। ये महिला के जीवन का एक बहुत ही सामान्य लेकिन महत्वपूर्ण हिस्सा है। अगर ये ना हो तो मनुष्य संतान कैसे प्राप्त कर पाएंगा? कितनी महिलाएं माहवारी से जुड़े अंधविश्वासों के नियमों का सामना करती है, जो कि बंद होना बहुत जरूरी है।

● आकांशा, पूर्वी दिल्ली

तोडों बंधन

पुरुषों की तुलना में हम महिलाओं को बहुत बंधनों में रखा जाता है। यहां तक कि जब कोई त्योहार आता है तो सारा काम सिर्फ महिलाएं ही करती हैं, पुरुष बस आराम से बैठकर हुकूम ही चलाते हैं। महिलाओं को व्रत रखना पड़ता है और घर के लोगों के लिए नए-नए पकवान बनाने पड़ते है। मुझे नहीं लगता कि ये धर्म है, ये पुरुषों की सोच है, जो महिलाओं को हमेशा अपने से नीचे दबाकर रखने में मानती है। ये त्योहार और धर्म सिर्फ पुरुषों के लिए है, महिलाओं की खुशी मनाने के लिए नहीं है, मुझे लगता है, पुरुष ये चाहते ही नहीं है कि महिला घर से बाहर निकले, कुछ सीखे और उनके साथ कदम से कदम मिलाएं। वे चाहते हैं कि महिलाएं उनके पीछे ही रहे, इसलिए पुस्तकों में ना होने के बावजूद ये सारे नियम पुरुषों ने महिलाओं के लिए बनाए हैं।

● नेहा, पूर्वी दिल्ली

थोपे गए हैं नियम

मुझे लगता है कि धर्म पे भेदभाव लोगों ने खड़े किए हैं और धर्म के आधारित रीति-रिवाज़ लोगों ने बनाए है। यहां तक कि लोग एक-दूसरे के धर्म में शादी करवाना भी पसंद नहीं करते। पुरुषों ने धर्म के नाम पर महिलाओं पर कुछ ज्यादा ही नियम डाल दिए हैं। महिलाओं को घरेलू काम में बंदी बनाया जाता है, वे चाहते हुए भी बाहर का काम नहीं कर सकती। अगर किसी तरह वे बाहर का काम करने जाए तो आस-पास के लोग उसे नीची नज़रों से देखते हैं क्योंकि उनको लगता है एक महिला का धर्म है घर के दरवाजे के भीतर ही रहना। यहीं सोच के साथ ध र्म के आधारित कोई काम हो, जैसे कि पूजा-पाठ या शादी, महिलाओं को हमेशा पीछे ही रखा जाता है। अगर धर्म की किताबों को सही से पढ़ते और यदि ध र्म के नियमों को सही से समझते तो महिलाओं का जीवन ऐसे व्यतीत नहीं होता।

● लक्ष्मी, पूर्वी दिल्ली

बोलो तो बदलाव आएगा

मैं अपनी सहेली की शादी में गई थी। वहां मैंने देखा की उसकी दादी अपने कमरे में ही बैठी थीं, विवाह के काम में शामिल नहीं हो रही थी। मैंने अपनी सहेली के पापा से बात की और उन्हें समझाया, की दादी को भी तो अपनी पोती की शादी से खुशी है, उनको भी शादी में शामिल करना चाहिए। विधवा को धार्मिक रूप से शुभ काम से दूर रखने की प्रथा को बंद करने के लिए हमको ही कदम उठाना पड़ेगा।

मेरे मित्र के पिता को मेरी बात अच्छी लगी और दादी को बाहर ले आए। दादी भी खुशी से रोने लगी। मुझे बहुत अच्छा लगा कि मैंने एक प्रथा को बदला।

● गीता शर्मा, दक्षिणी दिल्ली, बैच 110

धार्मिक विविधता से जुड़ाव

सब धर्मों को मान

आज के युग में भेदभाव को आम आदमी कोई मान्यता नहीं देता है। क्योंकि आज कल हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी एक दूसरे के साथ मिलकर हर त्योहार को मनाते हैं और सभी एक दूसरे को हर त्योहार की बधाई देते हैं। हमने अधिकतर अपने आस-पास जो महसूस किया है वो यह है कि सभी लोग त्योहार कोई सा भी हो सभी उस त्योहार को मनाते हैं।

मैं हिंदू हूं लेकिन मुझे मज़ार पर जाना बहुत अच्छा लगता है। मेरी बहुत सी सहेलियां हैं जो हर धर्म से हैं। जिनके साथ मैं हर त्योहार को मिलकर मनाती हूं। और हम सबको दूसरे धर्मों को मान-सम्मान देना चाहिए और एक दूसरे का साथ देना चाहिए। किसी में भेदभाव नहीं करना चाहिए और किसी के धर्म को लेकर ऊंगली नहीं उठानी चाहिए।

● रंजीता, दक्षिणी दिल्ली

त्योहार इतने सारे

हमारे आस-पास अलग-अलग धर्म के लोग रहते हैं। वैसे ही त्योहार भी अलग-अलग होते हैं। और हमारे यहां सबके साथ ही मनाते हैं। सब एक दूसरे के परिवार वालों को बुलाकर उनका आदर सम्मान करते हैं। और खाना-पीना भी साथ में होता है। कुछ लोग तो तौहफे देते हैं। और कभी ऐसा भी होता है कि गांव से आए परिवार वाले यह देखते हैं और कहते हैं कि तुम्हारे यहां का माहौल कितना अच्छा है कि सब एक जैसे लोग हैं। कोई धर्म के नाम पर भेदभाव नहीं करते और इतने सारे त्योहार मनाए जाते हैं तो बहुत अच्छा लगता है।

● अंशू, दक्षिणी दिल्ली

विचित्र पर खूबसूरत

मुझे गर्व है कि मैं भारतवासी हूँ। यहां पर धर्म के विचार से काम-काज नहीं चलता है, हर कोई एक होकर चलता है। हर कोई अब धर्म मानकर नहीं चलता है। सब कोई एक समान है। हर जाति के लोग यहां पर रहते हैं, अपने तरीके से काम करके दिन चलाते हैं, अपनी जाति का उत्सव पालन करते हैं।

अपने धर्म को मानने से यहां पर कोई रोकता नहीं है। किसकी पूजा करनी है या फिर अल्लाह या भगवान को बुलाना है, कोई नहीं बोलता। लेकिन हम सब हर किसी के उत्सव में एक होकर आनन्द करते हैं, मिल के खुशियां बांटते हैं। इसी तरह से हमारा रोजगार और जीवन भी चलता है। एक बात में बोला जाए तो भारत एक विचित्रमय देश है, एक महान देश है।

● जोबा घोष, कोलकाता

धर्मनिरपेक्ष देश

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। जहां पर सभी धर्म, जाति, वर्ग के लोग रहते हैं। भारत ही एक ऐसा मात्र देश हैं जहां विविधता में एकता है।

भारत में सभी धर्मों के लोगों को अपने धर्म का प्रचार व प्रसार करने का पूर्ण सौभाग्य प्राप्त है। भारत में राज्य का अपना कोई धर्म नहीं हैं। संविधान के अनुसार राज्य की नज़र में सभी धर्म समान हैं।

● बुलबुल, पूर्वी दिल्ली

बदलती तस्वीर

हमारे समाज में पढ़ाई की वजह से लोगों के विचारों में खुलापन आ रहा है। नए विचारधारा के साथ लोग आगे बढ़ रहे हैं। हिंदू और मुसलमान का कोई भेदभाव नहीं है। किसी भी धर्म का त्योहार हो, लोग अपने से अलग धर्म वाले दोस्तों को भी बुलाते हैं।

अपने समुदाय के लोगों की तरह मान-सम्मान करते हैं। और दूसरे जाति के लोगों के त्योहार में पूरी उत्साह से मनाते हैं। कभी-कभी कुछ राज नीतिक लोग जाति धर्म को लेकर देश में हमारे आस-पास हिंसा का माहौल बनाने की कोशिश करते हैं।

शिक्षा की वजह से लोग सही और गलत के और जाति धर्म के भेदभाव को समझने लगे हैं। और समाज में जागरूकता बढ़ गई है। और सब मिलजुलकर रहना चाहते हैं। और आगे बढ़ना चाहते हैं।

● नालंदा, दक्षिणी दिल्ली

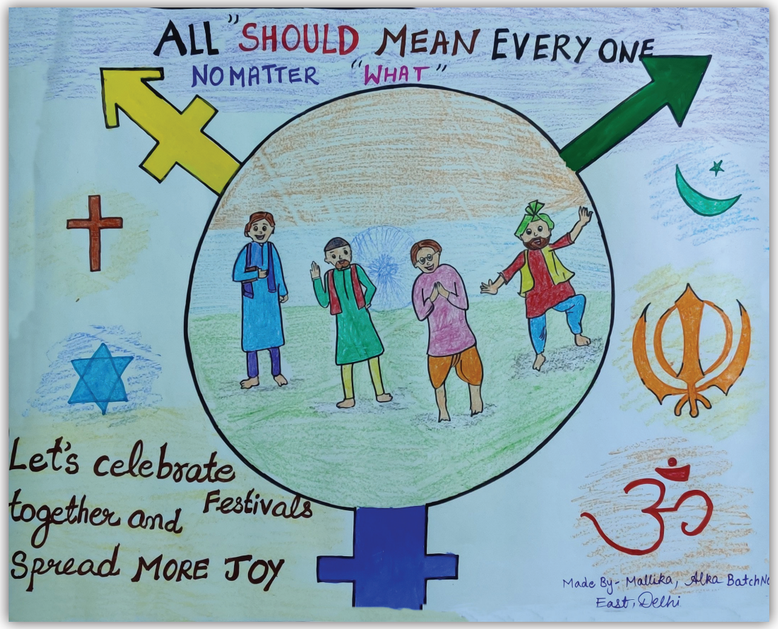

दोस्ती धर्म से ऊपर

विभिन्न धर्म के लोगों के एक साथ रहने के विषय को मैने अपने जीवन मे बहुत अच्छे तरीके से अनुभव किया है। कारण, मै जब स्कूल मे पढ़ती थी, वहां हर धर्म की लड़कियां पढ़ती थी और मै सब के साथ बहुत ही अच्छे तरीके से मेलजोल करती थी, एकसाथ खेलकूद भी करती थी। मेरी बेस्ट यानी खास दोस्त एक मुसलमान लड़की थी। इस विषय में मेरे पिताजी को बहुत ऐतराज था। मैं उसको भगवान के घर में ले जाती थी, इसलिए धमकी भी खानी पड़ती थी। वो लड़की और उसके परिवार के साथ अभी भी मेरी दोस्ती है, और अब मैं मेरे पिताजी को भी समझा पाई हूं कि धर्म हम लोग ऊपर से लेकर नहीं आए हैं, ये हम लोगों पर आरोपित किया गया है।

● सुमाना नंनदी, कोलकाता

काबा फिर काशी भया, राम भया रहीम। मोट चुन मैदा भया, बैठी कबीर जिम

विविधता में एकता

जब भी हमारे आस-पास किसी भी धर्म का त्योहार मनाया जाता है। तो मुझे उसका हिस्सा बनना बहुत अच्छा लगता है। हमारे आस-पास बहुत सी जाति के लोग है, जो सभी त्योहार मनाते हैं और सभी लोग उनमें शामिल होते हैं। हम सब लोग मिलकर सभी जाति को सम्मान करते हैं। हमारे यहां की पुलिस भी हमारे साथ मिलकर सहयोग करती है। किसी भी प्रकार की लड़ाई नहीं होती क्योंकि हमारे यहां की पुलिस उसका पुरा सम्मान करती है। सभी जाति व धर्म को पुरा अधिकार दिया जाता है। किसी के भी साथ भेदभाव नहीं किया जाता है। ना ही किसी को उनकी जाति से जाना जाता है।

● आरती, दक्षिणी दिल्ली

संत कबीर कहते हैं... मक्का काशी और राम रहीम एक समान हैं। धर्म की रूढ़ीवादी सोच को छोड़कर एकता का पाठ सीखें।

धर्म मनुष्यता हैं

मेरा यह कहना है कि धर्म सभी के अलग-अलग हैं लेकिन उनका सार एक ही होता है - क्षमा, प्यार, प्रेमभाव से रहना, उदारता।

धर्म यही हमें सिखाता है। किन्तु धर्म के नाम पर ही इस दुनिया में कई लड़ाईयां लड़ी जाती हैं। ये इसलिए होता है क्योंकि कुछ स्वार्थी मनुष्य धर्म के नाम पर लोगों में भेदभाव पैदा करते हैं। सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए।

लोग बेवकूफ हैं जो इनकी बातों में आकर लड़-मरते हैं। मेरे लिए धर्म मानव की मनुष्यता, और मैत्री भाव का प्रतीक है।

● रेबा कयाल, सखा चालक, कोलकाता

त्योहार ही है ज़िंदगी

धर्म चाहे जितने ही अलग-अलग हो, त्योहारों के समय अलग-अलग धर्मों में काफी भिन्नता और एकता देखने को मिलती है।

त्योहारों के समय लोग अपने घर मिठाई बनाते हैं, एक-दूसरे के घर जाते हैं, नए कपड़े पहनते हैं और घर सजाते हैं। किसी धर्म में पूजा-पाठ करते हैं तो किसी में प्रार्थना और किसी में नमाज पढ़ते हैं। हर एक व्यक्ति ईश्वर को अपने-अपने तरीके से याद करता है और खुशियों को बांटता है।

● अंजली, पूर्वी दिल्ली

रिश्तों की जड़ धर्म से बड़ी

मेरे जो दोस्त हैं सब अलग-अलग धर्म के हैं। मैं मुस्लिम, कोई हिंदू, तो कोई क्रिश्चियन अलग-अलग धर्म के होते हुए भी हमारे बीच कभी भेदभाव नहीं आया। बल्कि हम सारे दोस्त एक दूसरे का खाना भी छीन कर खा लेते हैं। कई बार कुछ लोगों ने बोला दूसरे धर्मों के लोगों से ज्यादा मतलब मत रखों। पर मेरे परिवार वाले ने कभी मुझे मना नहीं किया कि इनसे बात मत करना। जब मेरा कोई त्योहार आता था तो मेरे सारे दोस्त मेरे घर आते थे। मुझे इसी बात की हमेशा खुशी थी

हमारे पड़ोस में एक हिंदू आंटी रहती हैं, उनके पति उनको बहुत मारते थे। पापा ने उनको अपनी बहन माना और उनको सपोर्ट किया। उस दिन के बाद आंटी के साथ हमारे परिवार का एक रिश्ता जुड़ चुका है। वो अपने सारे त्योहार हमारे परिवार वालों के साथ मनाती हैं। कभी ऐसा लगा ही नहीं कि वो हमारे परिवार से अलग हैं। इसे कहते हैं एकता। मुझे बचपन में एकता का मतलब उतना नहीं समझ आता था। पर अब एकता देखती भी हूं और इन रिश्तों ने एकता का मतलब समझा भी दिया। मुझे हिंदूओं के सारे त्योहार पसंद हैं। उनके त्योहारों से भी एक अलग खुशी मिलती है। और मुझे इस बात की खुशी है कि मेरे परिवार में सारे त्योहार मनाए जाते हैं।

● तानिया, पूर्वी दिल्ली

जुड़े हैं सब साथ

हमारे आस-पास अनेक प्रकार के लोग रहते हैं। अनेक धर्म और त्योहार मनाएं जाते हैं। सभी एक दूसरे के त्योहार में योगदान देते हैं। एक दूसरे के पहनावे और खाने-पीने की तारीफ करते हैं। मैं एक मुस्लिम हूं, मेरे आस-पास के लोगे मेरे खाने की बहुत तारीफ करते हैं। मैं अपने दोस्त के साथ मंदिर भी जाती हूं। उनके साथ भंडारा भी खाती हूं। जो बहुत अच्छे से बनाते हैं। उनको खाने की तारीफ करती हूं। उन्हें बहुत अच्छा लगता है। जब उनके मंदिर की बनावट के बारे में बताते हैं सुनकर बहुत चीजों के बारे में पता चलता है। ये जानकारी मुझे बहुत अच्छी लगती है। मेरे दोस्त मेरे साथ मजार पर भी जाते हैं। उनको वहां जाने के बाद शांति मिलती है। ये बातें सुनकर अच्छा महसूस होता है।

● चांद बानो, दक्षिणी दिल्ली

खुशियाँ तो एक सी हैं

मैं काजल, जब मैं स्कूल में पढ़ती थी तो मेरे बहुत से दोस्त थे तथा सभी अलग-अलग धर्म से संबंधित थे। हम खाना खाते थे तब मन में ये कभी नहीं आया कि ये अलग धर्म का है तो हम इसके साथ नहीं खाएंगे। हमें एक दूसरे के साथ खाने खेलने तथा रहने में बहुत खुशी मिलती थी। मैं अपने दोस्त रुखसाना के घर गई थी उस दिन ईद का त्योहार था। उनकी मम्मी को नमस्ते बोला और फिर मैंने वहां का माहौल देखा। ज़्यादा अलग तो नहीं था मेरे त्योहार से। पर खान-पान में कुछ अलग देखने को मिला। बाकी उनका पहनावा भी वही था जैसे हम पहनते हैं। जैसे हम सजते हैं। सब कुछ एक ही प्रकार का था। मुझे बहुत अच्छा लग रहा था। धर्म चाहे अलग-अलग हो, लेकिन हम सब के त्योहार मनाने के तरीके और खुशियाँ कितने मिलते-जुलते हैं।

● काजल, उत्तरी दिल्ली

मेरा धर्म

ढाई आख़र प्रेम का...

धर्म ना गीता है, ना ही कुरान धर्म है ना ही बाईबल है। और ना ही ग्रंथ धर्म ना उपवास हैं ना ही गंगा में डुबकी लगना और ना ही अगरबत्ती लगाना और ना ही धर्म ना पहनावा है और ना ही खान पान धर्म ना हज है और नाही तीर्थ यात्रा धर्म ना हकीम हैं नाही दारू ना भांग धर्म ना मंदिर हैं और ना ही मस्जिद ना गिरजाघर, धर्म ना जनेऊ है और नाही सुन्नत धर्म ना हरिद्वार है। और नही गुरूद्वारा धर्म ना पांच नवाजी धर्म तो इंसानियत है। धर्म तो प्रेम है। धर्म तो बंधुत्व है। धर्म तो बेरोजगारों की मदद करना, धर्म तो भूखों को खाना खिलाना, धर्म तो बेसहारों को सहारा देना, अगर आप भूखों को दो नीवाले खिला ना पाएं तो ये कैसा धर्म है। अगर आप बेरोजगार को मदद ना करें तो यह कैसा धर्म है? अगर आप बेसहारा को सहारा ना दें तो ये कैसा धर्म है। धर्म पहनावे से नहीं खानपान से नहीं और ना ही दौलत से होता है। धर्म तो इंसानियत से होता है। जिस समाज में इंसानियत ना हो वहां कैसा धर्म।

● काज़ल मंडल, कोलकाता

धर्म और पॉजिटिवटी

मैं बचपन से ऐसी कॉलोनी में रही हूं जहां पर हर धर्म और जाति के लोग रहते है। हम हमेशा मिल-जुलकर सारे त्योहार मनाते है। मुझे मेरे धर्म का पालन करने में एक पॉजिटिवटी मिलती है। मुझे हर एक धर्म से अच्छी चीज़ सीखना अच्छा लगता है। इससे मुझे सारे धर्मों के बारे में पता भी चलता है और मेरा विश्वास भी बढ़ता है।

● दीपा, उत्तरी दिल्ली

शांति और शक्ति का स्रोत

हर दिन कुछ समय मैं प्रार्थना में देती हूं तो मुझे शक्ती मिलती है। मुझे पूजा-पाठ करना अच्छा लगता है इससे मेरे मन को शांति मिलती है। मैं एक सशक्त महिला हूं और दूसरी महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए मदद करना अच्छा लगता है।

● शीता, उत्तरी दिल्ली

पाठकों के लिए विशेष सूचना: आप में से जो भी अखबार के लिए लिखना चाहते हैं, सबके साथ बाँटना चाहते हैं ... अपनी कहानी, कोई रोचक अनुभव, कोई संदेश या ख़ास खबर, कोई चित्र या फोटो, शेर-ओ-शायरी, गीत-चुटकुला या विचार, चिंताएँ, कुछ भी, तो ...

संपादक: अमृता और पूजा

अन्य सहयोगी: इंदीरा, परिधि

बी-7, तीसरी मंज़िल, शंकर गार्डन, विकासपुरी पश्चिमी,
नई दिल्ली-110018
फोन : 011-49056322 • वेबसाइट : www.azadfoundation.com

-: डिस्क्लेमर :-
आज़ाद फाउण्डेशन और सखा दो अलग-अलग संस्थाएँ हैं।
आज़ाद एक एन.जी.ओ. है और सखा एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी।

और कुछ यादें

जीनत 'आज़ाद परिंदे' अंक 15 की सूत्रधार भी रही।
हमारी तरफ से जीनत को श्राद्धंजली

जीनत की याद को सर्मपित

जीनत ने अपने तीन साथियों के साथ आज़ाद फाउंडेशन में अप्रैल 2015 को एडमिशन लिया था। जीनत एक मिलनसार , मेहनती, सुलझी हुई, खुशदिल और समय के साथ चलने वाली सोच रखती थी। सबके प्रति नजरियाँ हमेशा सकारात्मक था। अक्सर अपने आस-पास के लोगों समझने और सपोर्ट करने की कोशिश करती थी। जीनत का यह मानना था कि लड़कियां कुछ भी कर सकती हैं। बस हिम्मत करने की देर होती है बाकी सब आपने आप मिल जाता है।

जीनत ने कभी भी किसी जाति धर्म में भेदभाव नहीं किया और दूसरों को भी हमेशा यही समझाती रहती थी। जीनत एक होनहार ड्राइवर थी। सखा के साथ दो साल से ड्राइविंग की जॉब कर रही जीनत अब हमारे बीच नहीं रहीं। लेकिन जीनत का हमेशा कुछ कर दिखाने वाला जज़्बा, हिम्मत आजाद और सखा के दिल में हमेशा रहेगा।

● पदमा पांडे, ट्रेनिंग कॉर्डिनेटर, पूर्वी दिल्ली।

हैलो दोस्तों,

मैं ग्रेस आपसे अपने मन की बात शेयर करना चाहती हूं। मुझे आज़ाद और सखा से जुड़े लगभग दस वर्ष हो गए। आज़ाद के साथ सीखने की प्रक्रिया बहुत रोमांचक रही है। फिर पेशे के रूप में काम करके मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।

2018 में मेरी जीनत से मुलाकात हुई। जीनत एक बहुत अच्छी और मिलनसार लड़की थी। उसे लोगों की मदद करना अच्छा लगता था। वो ज़िंदगी को खुलकर जीने में विश्वास करती थी और वो यही कहती थी कि "जिंदगी एक बार मिलती है तो उसे खुलकर जीयो, जाने पता नहीं फिर कभी दूसरा जन्म होगा तो खुदा क्या बनाकर भेंजे।

आज हमारे बीच में जीनत नहीं है। तो दुख होता है कि एक खुश मिजाज लड़की को हमने खो दिया है। ईश्वर उसकी आत्मा को शांति दे मैं यही चाहती हूं।

● ग्रेस एलीजाबेथ, सखा कैब चालक